STEPPING STONE
SCHOOL (HIGH)

Class- V

Worksheet no.-22

Subject -2nd language (Hindi). **Date-17/06/20**

Topic – prose(ch-2) **Time limit-30 minutes**

पाठ-2 मुसकराता राजकुमार की कहानी का आधा अंश भावार्थ के साथ दिया जा रहा है। भावार्थ द्वारा कहानी को अच्छे से समझिएगा और रेखांकित वर्तनी को कॉपी में लिखिएगा।

बच्चों आप अपनी सुविधा के लिए worksheet no-16,17 के कार्य भी यदि कॉपी में कर ले तो आपके लिए अच्छा रहेगा। इससे पूरा पाठ- 1 एक साथ हो जाएगा और आपको याद करने में भी आसानी होगी।

[Copy the questions following the notes and solve them on a sheet of paper datewise. Keep the worksheets ready in a file to be submitted on the opening day.]

2 मुसकराता राजकुमार

यह कहानी है एक ऐसे मुसकराते हुए राजकुमार की जो मरकर भी अपनी प्रतिमा पर लगे रत्नों, हीरों एवं सोने से ज़रूरतमंदों की सहायता करता है। दूसरों की मदद वह कैसे करता है, आइए पढ़कर जानें–

एक शहर के मध्य एक प्रतिमा लगी हुई थी। यह प्रतिमा उस राज्य के किसी राजकुमार की थी, जो सदैव मुसकराता रहता था। इसीलिए सब उसे मुसकराता राजकुमार कहते थे। उसका रंग सुनहरा तथा उसके वस्त्र सोने की परतों से बने हुए थे। उसकी आँखें हीरेजड़ित और तलवार रत्नों से जड़ी हुई थी। जो भी वहाँ से गुज़रता, उस प्रतिमा की सुंदरता एवं मुसकान की तारीफ़ किए बिना न रह पाता।

एक दिन उस राज्य क दो मंत्री वहाँ से गुज़र रहे थे। उन्होंने उस प्रतिमा को देखा। उनमें से एक बोला, "वाह, कितनी सुंदर प्रतिमा है। कलाकार ने जैसे इसमें जान ही डाल दी है, लगता है जैसे अभी बोल उठेगी।"

मुसकराते राजकुमार की प्रतिमा की मुसकान की बातें सुनकर मंत्री जी आगे बढ़ गए। तभी एक माँ अपने छोटे बच्चे का हाथ थामे वहाँ से गुज़री। बच्चा रो रहा था। माँ ने मुसकराते राजकुमार की प्रतिमा की ओर इशारा करते हुए कहा, "उस राजकुमार को देखो, सदैव मुसकराता रहता है। तुम्हें भी सदा उसकी तरह मुसकराना चाहिए। बात-बात पर रोना अच्छी बात नहीं है।" यह सुनकर राजकुमार की प्रतिमा को और अच्छा लगा।

अभी कुछ ही देर बीती थी कि एक चिड़िया कहीं से उड़ती हुई आई और उस प्रतिमा पर बैठ गई। चिड़िया बहुत थकी हुई लग रही थी। उसके पीछे उड़ते-उड़ते अन्य चिड़ियाँ भी आ रही थीं। चिड़िया अभी आराम ही कर रही थी कि बूँदा-बाँदी होने लगी। चिड़िया बोली, "अरे मैं तो आराम करने यहाँ बैठी थी किंतु अब क्या करूँ यहाँ तो बारिश से बचने के लिए सिर ढकने की भी जगह नहीं है। क्या फ़ायदा ऐसी मूर्ति का जो किसी को भीगने से भी न बचा सके। अपनी चिमनी में ही चलती हूँ, इससे तो वहीं अच्छी है।"

चिड़िया की बात सुनकर मुसकराते राजकुमार की आँखों में आँसू आ गए। वह चिड़िया की मदद करना चाहता था। उसने चिड़िया से कहा, "रुको, मेरी बात सुनो। मेरे दोनों पाँवों के बीच बारिश से बचने की जगह है। तुम वहीं बैठ जाओ।" चिड़िया को राजकुमार की बात जम गई और वह वहीं बैठ गई।

रात को राजकुमार ने चिड़िया से कहा, "तुम्हें पता है, कभी मैं भी सेन साऊची के बड़े किले में रहता था। सदा खुश रहता था तथा हमेशा सबके काम आता था। अब मैं जीवित नहीं रहा। शायद मेरा दिल भी नहीं रहा। मैं चाहते हुए भी किसी की कोई मदद नहीं कर सकता। क्या तुम मेरी मदद करोगी?"

चिड़िया बोली, "हमें वसंत से पहले अपने नए स्थान पर पहुँचना है। मेरे साथी मुझे ढूँढ़ रहे होंगे। जल्दी बताओ, तुम्हारा क्या काम है?"

मुसकराता राजकुमार बोला, "चिड़िया, तुम राजमहल में जाओ। वहाँ रानी के महल के बाहर सेवकों के कमरे हैं। उनमें एक छोटा-सा कमरा होगा। वहाँ एक बीमार लड़का भूखा-प्यासा होगा। पर उसकी माँ के पास खिलाने को कुछ भी नहीं है। यहाँ तक कि उनके पास दवा के भी पैसे नहीं हैं। तुम मेरी आँखों में से कुछ हीरे निकालकर उसे दे आओ। वह हीरे बेचकर अपने बेटे का इलाज़ करवा लेगी और उसे भोजन करवा देगी।"

चिड़िया बोली, "नहीं, मैं उस लड़के की मदद के लिए बिलकुल नहीं जाऊँगी। जानते हो, पिछले साल जब मैं नदी पार कर रही थी तो कुछ शरारती लड़कों ने मुझे पत्थर मारे थे।" चिड़िया की बात सुनकर राजकुमार उदास हो गया। राजकुमार को उदास देखकर चिड़िया ने झट से उसकी बात मान ली। उसने अपनी चोंच से कुरेदकर उसकी आँखों से कुछ हीरे निकाल लिए और तेजी से उड़ती हुई राजमहल के पास पहुँची। उसने हीरे उस छोटे कमरे में गिरा दिए।

अपने कमरे में चमकते हीरे पाकर लड़के की माँ बहुत खुश हुई और अपने बेटे की दवा और खाना लाने दौड़ती हुई बाहर चली गई।

भावार्थ-कहानी में दिए गए अंश में राजकुमार के दयालु हृदय को दर्शाया गया है। राजकुमार जीते जी सबकी मदद तो करता ही था, मर कर भी वह जरूरतमंदों की सहायता करता है। वह चिड़िया को बारिश से बचने की जगह बताता है। अपनी प्रतिमा की आंखों में जड़े हीरे निकलवा कर भूखे- प्यासे बीमार लड़के की मां के पास भिजवाता है। जिससे उसका इलाज हो सके और उसे भोजन मिल सके। प्रतिमा के रूप में राजकुमार स्वयं जाकर किसी की सहायता नहीं कर सकता था, इसलिए वह छोटी सी चिड़िया से मदद लेता था।